श्री पन्ना लाल बारूपाल : उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस विधेयक को पुर:स्थापित कर रहा हूँ।

CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL*

(*Omission of Article* 370)

SHRI P. M. MEHTA (Bhavnagar) : I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Constitution of India.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Constitution of India."

The motion was adopted.

SHRI P. M. MEHTA : I introduce the Bill.

COMPULSORY MILITARY TRAINING SCHEME BILL*

SHRI P. M. MEHTA (Bhavnagar) : I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for compulsory military training to all able-bodied citizens in the country.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for compulsory military training to all able-bodied citizens in the country."

The motion was adopted.

SHRI P. M. MEHTA : I introduce the Bill.

15.32 hrs.

INDIAN PENAL CODE (AMENDMENT) BILL—*Contd.*

(*Substitution of Section 153A by Shrimati Subhadra Joshi*)

MR. DEPUTY-SPEAKER : We take up further consideration of the following motion moved by Shrimati Subhadra Joshi on the 30th March, 1972 :—

"That the Bill further to amend the Indian Penal Code, be taken into consideration."

Two hours and 30 minutes were allotted. We have taken one hour and 26 minutes, and the balance is one hour and four minutes. Shri Darbara Singh to continue his speech.

श्री दरबारा सिंह (होशियारपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, मै अर्ज करना चाहता हूं कि इस बिल की अहमियत इसलिए भी ज्यादा है कि इसके जरिये हम कम से कम यह बात कर सकते है कि जितनी फीलिंग्स नफ़रत की, जिसको हैट्रिड कहते है, पैदा की जाती है, वे इससे कम होगी। आज कई लोग गलत तौर पर रिलिजन का नाम ले कर, धर्म का वास्ता डाल कर तमाम पालिटीकल ताकत हासिल करने के लिए कोशिश करते हैं। मै सिर्फ पंजाब की ही बात नही करता और सूबो मे भी ऐसी बातें हैं कि वे किस तरह से नीचे तक चले जाते है, इतनी सतह तक चले जाते है कि ब्राह्मण ब्राह्मण मे कैसे लड़ाई हो, जाट और राजपूत में कैसे लड़ाई हो सकती है। उसके लिए भी एक सवाल हमारे सामने है कि वह नफ़रत कैसे पैदा करके जात-बिरादरी के नाम पर, रिलिजन के नाम पर एक ऐसी स्ट्रगल करा देते है जिससे तमाम देश भर में ऐसे हालात पैदा हो जाएं कि कोई भी एक दूसरे के पास प्यार से बैठ न सके और जो एक आइडिया हम देते हैं कि सारा देश एक है, वैसा देश कभी न बनने पाये। यह एक बहुत बुरी बात है जिसका

*Published in Gazette of India Extraordinary, Part II, section 2, dated 14.4.72.